

पाठ-योजना

कक्षा-दशमी

विषय-हिंदी (कोर्स-ए)

प्रकरण-क्षितिज-पद्य-खंड-पाठ-1(उधौ तुम हो अति बड़भागी,सूरदास)

उद्देश्य-

- कवि सूरदास का जीवन परिचय, ब्रज-भाषा, साहित्यिक विशेषताएं, 'सूरसागर' में संकलित 'भ्रमरगीत' व अन्य ग्रंथों 'साहित्य लहरी' तथा संबंधित काव्यगत विशेषताओं यथा-शृंगार और वियोग की पीड़ा, कृष्ण के प्रति सख्यभाव, वात्सल्य सुख की अनुभूति व पदों के मूल उद्देश्यों से अवगत हो, साहित्यिक एवं ज्ञानात्मक व भाषात्मक स्तर में अभिवृद्धि करना ।
- सहजता, सरलता, उलाहना व अपनत्व तथा प्रेम व भक्ति भाव, विरह-पीड़ा, चंचल मन, राजधर्म आदि जीवन मूल्यों से अभिप्रेरित हो, सरल व वास्तविक जीवन यापन करने का कौशल प्राप्त करना ।
- पदों से सम्बंधित कठिन शब्दार्थ का उच्चारण व अर्थ तथा वाक्य रचना व पदों का परिचय, अर्थ, भावबोध आदि से अवबोधित हो, पदों पर आधारित प्रश्नोत्तर अभ्यास परिचर्चा कर चिन्तनात्मक, ज्ञानात्मक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना ।
- अर्थग्रहण, भाषा शैली, विश्लेषण एवं अभिव्यक्ति कौशल प्राप्त करना ।
- पदों का अर्थ व भाव से अवगत हो, विषय-वस्तु में अभिरुचि उत्पन्न कर पदों का वाचन, मौखिक व लेखन कौशल प्राप्त करना ।
- प्रश्नोत्तर परिचर्चा के द्वारा संप्रेषण में निपुणता व तार्किक क्षमता का विकास होना ।

अध्यापक -क्रिया-

- प्रत्यास्मरण- पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रस्तावित प्रश्नोत्तर परिचर्चा -

प्रस्तावित प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ को पूर्वज्ञान के आधार पर गति देते हुए पाठ के मूल विषय से अवगत कराया जायेगा ।

यथा-

1. हिंदी के भक्त कवियों में कौन से कवि शिरोमणि माने जाते हैं ?
2. सूरदास जी किसके परम भक्त थे ?
3. सूरदास जी के प्रमुख ग्रन्थ कौनसे हैं ?
4. सूरसागर की रचना किसने की ?

'सूरसागर' ग्रन्थ, सूरदास जी व सूरसागर के प्रसंग 'भ्रमरगीत' के पदों का संक्षिप्त परिचय देते हुए आदर्श वाचन-

यथा-

सूरदास के काव्य की भाषा ब्रज भाषा है। काव्य में कहीं उलाहना का भाव है तो कहीं अपनत्व का भाव। सूरदास के काव्य 'सूरसागर' में संकलित 'भ्रमरगीत' में गोपियों की विरह-पीड़ा को दर्शाया गया है। कृष्ण जब गोकुल से मथुरा आए और वापस नहीं जा सके तो उन्होंने उद्धव को गोपियों को समझाने के लिए उनके पास भेजा। उद्धव गोपियों को ज्ञान और योग का यह शुष्क संदेश दे ही रहे थे कि तभी एक भौंरा वहाँ आकर गोपियों के चारों ओर मंडराने लगा। तब गोपियों ने उस भ्रमर के बहाने प्रेम-संदेश के बदले श्री कृष्ण के योग-संदेश लाने वाले उद्धव पर व्यंग्य-बाण छोड़े। भ्रमर को संकेत करके कहे गए पदों के कारण ही सूरसागर का यह प्रसंग 'भ्रमरगीत' के नाम से प्रसिद्ध है।

* पदों के मूल उद्देश्य से परिचित करवाकर कठिन शब्दार्थ व उचित लय-यति-रति-गति से पदों का भावानुसार सस्वर आदर्श वाचन करना।

* कठिन शब्दों का अर्थ बताते हुए प्रकरण से संबंधित प्रश्न व अर्थ पूछकर विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित कर पदों में रुचि उत्पन्न कर उनके द्वारा अनुकरण-वाचन में की गई त्रुटियों में संशोधन कर अभ्यास करवाते हुए सम्प्रेष्णात्मक विधि से शिक्षण किया जायेगा।

* पदों से संबंधित प्रश्नोत्तर अभ्यास परिचर्चा कर पूर्णरूप से स्पष्टीकरण एवं काठिन्य निवारण किया जायेगा

1. गोपियों द्वारा राज-धर्म क्यों याद दिलाया गया ?
2. गोपियों ने अपनी तुलना किससे की है और क्यों ?
3. गोपियाँ 'हारिल की लकरी' किसे कहती हैं और क्यों ?
4. गोपियों द्वारा उद्धव को बडभागी कहने के पीछे क्या व्यंग्य छिपा हुआ है ?
5. श्री कृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है, ऐसा गोपियों ने क्यों कहा ?

छात्र-क्रिया-

- छात्र सूरदास के पदों के मूल उद्देश्य, कठिन शब्दों के उच्चारण, अर्थ व व्याकरण तथ्यों से अवबोधित हो, विवरणात्मक भाषा में तर्क देते हुए पदों से संबंधित समस्त प्रश्नोत्तर अभ्यास कार्य पूर्ण कर सकेंगे।
- अनुकरण विधि से बोधात्मक स्तर के प्रश्नोत्तर पर परिचर्चा कर अपनी जिज्ञासा का समाधान कर सकेंगे।

यथा-

1. बडभागी कौन होते हैं ?
2. वास्तविक प्रेम क्या है ?
3. नारी को अबला क्यों कहा जाता है ?
4. मन की बात मन में कैसे रहती है ?
5. 'हारिल' का क्या अर्थ है ?

अभ्यास-प्रश्न-

1. गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली क्यों कहा है ?

2. 'जिनके मन चकरी' से आप क्या समझते हैं ? सूरदास द्वारा रचित पदों के आधार पर तर्क देते हुए स्पष्ट कीजिये।
3. गोपियों ने मन, वचन और कर्म से किसे मजबूती से पकड़ रखा है और क्यों ?
4. गोपियाँ कृष्ण से क्यों नाराज थीं और क्यों ?
5. सूरदास ने किन दृष्टांतों से उद्धव की अनासक्ति को प्रकट किया है ?

मूल्यांकन-

1. मौखिक एवं लिखित प्रश्नोत्तर अभ्यास परिचर्चा तथा कक्षा
2. परीक्षा के आधार पर मूल्यांकन किया जायेगा ।
3. छात्रों द्वारा पदों से सम्बंधित विचारात्मक बिन्दुओं को समझ तार्किक व सम्प्रेषण योग्यता प्रदर्शित कर अपने विचार प्रस्तुत करने के पर ।
4. प्रकरण से संबंधित कार्य-पत्रक के कार्य की प्रस्तुति भाव अभिव्यक्ति के स्तर पर ।

अधिगम परिणाम-

- * कठिन व नवीनतम शब्दों का उच्चारण अर्थ व वाक्य में प्रयोग करने में सक्षम होना ।
- * पदों के मूल उद्देश्यों से अवगत हो, वास्तविक प्रेम व भक्ति को समझ आनंदमय व यथार्थ जीवन जीना ।
- * सूरदास जी जन्मांध थे, अतः उनकी काव्यगत विशेषताओं से प्रेरित हो, प्रेरणात्मक कविताओं व दोहों की रचना करना तथा भाषा सम्प्रेषण में ब्रज व अन्य क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करना ।
- * पदों से संबंधित भाव व उद्देश्यों से अभिभूत हो, तार्किक स्तर पर लेखन शैली में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
- * अभिव्यक्ति में जीवन मूल्यों व मौलिकता की पहचान कर सकेंगे।
- * निर्गुण व सगुण भक्ति के मार्ग को समझ सार्थक भक्ति का आनंद की अनुभूति कर सकेंगे ।